International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 22-06-2019; Accepted: 24-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 69-71

हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन चेतना के विविध आयाम

डॉ. संतोष रामचंद्र आडे
संत रामदास महाविद्यालय, घनसावंगी, जि. जालना, मध्य प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

आधुनिक काल का समाज जीवन परिवर्तित होने के साथ साहित्य का स्वरूप, विषय में भी बदलाव आया है। दलित, विधवा, वेश्या, किसान की कहानी आज का साहित्य रहा है। आज का साहित्य "सामाजिक क्रांति की मशाल" बना है। शोषित, उपेक्षित, लांछित जीवन में अस्मिता, चेतना की जागृति लाने का कार्य कर रहा है। चेतना और जीवन का संबंध है। जीव का जीवन जीने का प्रयास, हलचल, कार्य करने की इच्छा चेतना का प्रमाण है। अन्याय को धमकाने वाली आत्मशक्ति, अस्तित्व की रक्षा के लिए विद्रोह कराने की भावना बढ़ाने वाली मनशक्ति "चेतना" ही है। चेतना जीव की भावधारा है।

भारतीय समाज जीवन में वर्ण, वंश, कुल, धर्म को महत्व दिया है। परिणामतः उच् वर्ग–निम्नवर्ग बना। सामाजिकता में दरारें पैदा हो गयीं। निम्नवर्ग, दलित, अछूत, अमानवीय बहिष्कृत जीवन जीता रहा। आज सामाजिक परिवर्तन के कारण दलित सामाजिक क्रांति कर लगा। समता, समानता, एकता की मांग करते हुए विद्रोही बना। दास्यत्व, गुलामी, कमजो मानसिकता को नकारते हुए दलित जाग उठा। मनुवादी व्यवस्था को ठुकराते हुए नई समा रचना करने लगा। अस्मिता, दलित जीवन की शक्ति बनी यही चेतना है। दलित का होश आना, सावधान होना, अपने को समझना चेतना हैए पौरुष शक्ति चेतना है। दलित चेतना राष्ट्र कर्म बना। दलितों को अपनी पहचान, करा देना चेतना है। सामाजिक परिवर्तन के लिए सहायन विधायक विचार, भावधारा चेतना है।

दलित जीवन में चेतना का निर्माण नामवर सिंह जी मानते हैं, पिछले दशक में दलितों स्त्रियों समाज के भिन्न तबकों को तोड़ने या जोड़ने वाले उपन्यास लिखे गए। दलित साहित्य चेतना के मूल में समाज सुधारकों, नेताओं, साहित्यकारों का कार्य है। आनंद यादव मानते हैं जब तक दलित शिक्षित, संगठित नहीं था तब तक शोषण का ज्ञान नहीं था, परिणामतः दलित साहित्य का निर्माण नहीं हुआ। स्पष्ट है चेतना जागृति में साहित्य का योगदान है। दलित साहित्य मानवता, समता, एकता, अधिकार की मांग करता है। धीरे–धीरे परंपरागत जीवन जीने वाला दलित संगठित बनकर विद्रोही बना।

मानवतावादी विचारधारा में ईश्वर का स्थान मानव ने लिया। मानव का जीवन अध्ययन, चिंतन, मनन का विषय बना। प्रगतिवाद, मार्क्सवाद के सिद्धांत आधार बनने से सर्वहारा वर्ग, दलित वर्ग "शोषित समाज", पीड़ित वर्ग, मजदूर साहित्य में चित्रित होने लगा। निर्बलों, साधनहीनों को ताकत, प्रेरणा देने का प्रयास हुआ। दलित में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक शोषण का अंतर्भाव रहा तो सर्वहारा में सिर्फ आर्थिक शोषण तक सीमित रहा। प्रत्येक दलित सर्वहारा बनता है। उनकी व्यथा दलित साहित्य नाम से उभरी है। जिसमें दलितए अपनी वेदना, पीड़ा व्यक्त करता हुआ सामाजिक क्रांति का पथ चुनता है। यह एक आंदोलन ही रहा। है इसमें दलित जाग उठा है ऐसा लगता है।

दलित चेतना की आवश्यकता

भारत में हजारों वर्षों से हिंदुओं के धार्मिक ग्रंथों के आचरण, सिद्धांतों के बोझ को अपने सिर पर ढोने वाले दलित "वैज्ञानिक युग" में भी उस बोझ से मुक्त नहीं है। परंपरागत जातीय बंधनो से दलित क्या मुक्त होगा "सम्मानपूर्ण जिंदगी का वह हकदार बनेगा" समता की स्थापना कब होगी" आदि जैसे कई प्रश्नों में समाज अटका हुआ है। भारतीय उच्चवर्णियों को दलितोंद्धार, दलित जागरण की बात तीव्रता से महसूस नहीं हुई। दलित को जन्म से नीच, शूद्र, कर्म से हीन, मानकर दबा दिया, उपेक्षित रखा। दास, गुलाम, अछूत होने जैसी भावना दलितों को कचोटती रही। उच्च–नीचता, स्पर्श–अस्पृश्यता की भावना आहत होती रही। धार्मिक कट्टरता, टुकड़ी, मंदिर में प्रवेश पर प्रतिबंध, सामाजिक समारोह से उपेक्षित, अपमानित जीवन, आर्थिक भयावहता, दलितों के मन को घायल करती रही। राजनीतिक के निर्णय का अधिकार नहीं, पशु समान जीवन, गंदा कर्म करने की मजबूरी, जीवन की असुरक्षा, शिक्षा, धर्म व्यवस्था से दूर, शापित दलित पीड़ित बना। जीवन के प्रति सोचता हुआ अतीत की ओर देखता रहा है।

दलित चेतना जनहित, राष्ट्रहित, देशहित के लिए कल्याणकारी होगी। लगता है देश, समाज, राष्ट्र का विकास होगा, समृद्ध बनेगा। अतः इसके लिए दलितों में चेतना की आवश्यकता है। चेतना से परिवर्तन, परिवर्तन से विकास, विकास से प्रगति एवं समानता की स्थापना होगी। विकास तंत्र में चेतना ही है। अतः दलितों में चेतना का निर्माण होना दलितों के विकास का कारण है। समानता, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक संवर्धन एवं उद्धार के लिए दलितों में चेतना का निर्माण होना आवश्यक है।

चेतना के विविध रूप

दलित समाज आज नयी विकास नीतियों से लाभान्वित हो रहा है। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रों में दलित आगे बढ़ रहा है। चेतना का अर्थ, ज्ञान, चैतन्य, राजनीतिक चेतना. राजनीति, राजकाज, राजव्यवहार का प्रतीक होती है। समाज विकास के लिए विधायक राजनीति उपयुक्त होती है। दलितों के सामाजिक विकास में समता की स्थापना के लिए राजनीति का महत्व है। आजादी के पश्चात संविधान ने राजनीतिक अधिकार दिए। इसमें उच्चनीच का भाव नहीं है। दलितोद्धार के लिए कानून ने योगदान दिया है। राजनीतिक चेतना में सरकार, शासन व्यवस्था, चुनाव, पुलिस विधि, राजनीतिक दल आदि कई तत्व हैं।

राजनीतिक चेतना में चुनाव लड़ना, वोट देना, हड़ताल करना, जाति पंचायत का होना, दल बनाना, सरकार से संघर्ष करना आदि के दर्शन होते हैं। "वनवासी" में नागा पंचायत में विवाह, संबंध, नारी समस्या पर विचार होना, बिंदू द्वारा अपने हकए अधिकार की बातें करनाए "नाच्यौ बहुत गोपाल" में राष्ट्रीय आंदोलन में निर्गुनिया का शामिल होना, समाजवाद के नाम पर देश का चौपट होना ऐसा कहना, नसबंदी का विरोध करती हुई

वह कहती है "अब देवता राक्षस हो गए। नसबंदी में जो मेरे एक डाकू स्वरूप में भी ज्यादे हमारी इज्जत लूटी है। कांग्रेस वाले कैसे बदल गए।" यह प्रतिक्रिया राजनीतिक चेतना का प्रमाण है। डॉ. रामदेव शुक्ल के मतानुसार "देश के भाग्यविधाताओं के गहरे आत्मीय परिचय के अभाव में सारा राष्ट्रीय नियोजन निष्फल होना दिखायी पड़ता है। तो त्यागी के शब्दों में "अविकसित अंचलों में राजनीति का प्रवेश अधिकांशतः अहितकारी सिद्ध हुआ। चालाक नेतागणों ने वहाँ की भोली भाली जनता को उनके कल्याण का स्वप्न दिखाकर अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए प्रयुक्त किया । यह कथन दलितों के संदर्भ में यथार्थ लगता है।

यहाँ स्पष्ट है कि राजनीति का सही चित्रण हुआ है। विघातक राजनीति दलितों के लिए हानिकारक है। परंतु अरविंद, सोमेश्वर, भागवत बाबू जैसे दलित नेता दलितोद्धार का कार्य करते हैं, परंतु कई लोग दलितों का राजनीति के सहारे शोषण करते हैं। "महाभोज" इसका प्रमाण है। लगता है राजनीति के विधायक आकार विघातक दोनों भी रूप यहाँ रहे हैं राजनीति सत्ता प्राप्ति के साथ समाज सेवा का साधन है। यही विचार से राजनीति चलेगी तो गाँधी का भारत साकार होगा। भ्रष्टाचार, धर्मांधता की राजनीति गुलामी का प्रमाण है इससे देश को बचाना होगा यही संदेश दिया है।

धार्मिक चेतना.

धर्म मानवी जीवन को नियंत्रित रखने वाली एक संस्था है, तो मानवी जीवन धर्म को विकसित करने वाली व्यवस्था हैं आज धर्म को अफीम माना है। आज के कई धर्म सांप्रदायिकता की कट्टरता में सकपका रहे हैं, तो कई धर्म क्षीण हो रहे हैं। धर्मांतरण एवं सांप्रदायिकता आज समस्या का रूप ले रही है। धर्म को मजहबी अर्थ न देकर उदात्त, मानवतावादी रूप देना चाहिए। धर्म इंसान बनाने की व्यवस्था है परंतु जब धर्म इंसाफ नहीं देता, शोषण, दमन का कारण बने। तब लोग धर्म छोड़कर नये धर्म को स्वीकार करते हैं। दलितों के बारे में यह विचार यथार्थ लगता है। "निरुपमा" में चमार कुमार को चाहने वाली निरुपमा क्रिश्चियन बनी, "भूले बिसरे चित्र" में सामाजिक वैयक्तिक धर्म की चर्चा करते हुए दया, माया, प्रेम, ममता, सत्य को धर्म मानने वाले रामसहाय, "वनवासी" के नागा बिंदू–बड़ौज के विवाह को पंचायत द्वारा विरोध होने पर ईसाई बनना, "नाच्यौ बहुत गोपाल" की ब्राह्मण निर्गुनिया द्वारा मेहतर पति का धर्म स्वीकारना, पत्नी धर्म को निभाना, "मोंगरा" में धार्मिक पाखंडन का विरोध करके, हल चलाने का कार्य करने वाला ब्राह्मण मंगलू, जातिबाह्य कर्म के कारण पंचायत उसे पापी मानती है। "जंगल के आसपास" में रायसाहब ओझा की सहायता से कुकर्म करते, "शैलूष" में होम यज्ञ के नाम पर घुरफेंकन द्वारा हजारों रुपये ऐंठना परंतु प्रतापसिंह द्वारा उसे चरित्रहीन, भ्रष्ट करार देना, उसका पर्दाफाश करनी "नरककुंड में बास", "खारे जल का गाँव" में चमारों का मंदिर में प्रवेश "आग–पानी.आकाश" का एम.पी, भागवत बाबू मंत्री बनने से अवैध रूप से प्राप्त संपत्ति के आधार पर शिवमंदिर बनाकर अपनी धार्मिक प्रवृत्ति दिखाते, इस कार्य में भ्रष्टाचार होना यह धार्मिकता पर तीखा प्रहार है।

यहाँ स्पष्ट है दलित धर्म पालन करते हैं। अंधविश्वास, रूढ़ि–परंपरा के कारण धर्म शोषण का कारण बनता है। धर्म परिवर्तन करने से संस्कार नहीं बदलते। "मोरी की ईंटश में ईसाई बनी ब्राह्मणी अपना अंतिम संस्कार हिंदू पद्धति से कराना चाहती। पंत, जोशी ईसाई बनकर भी अपने संस्कार नहीं छोड़ते। सैम्युयल की माँ का कथन है वे लोग ईसाई हो गए तो क्या देवी–देवताओं को छोड़ देंगे। यहाँ स्पष्ट है उनकी मानसिकता बदलती नहीं।

आर्थिक चेतना

किसी भी देश की प्रगति, भौतिक विकास अर्थ पर निर्भर है। आर्थिक संपन्नता विकास, प्रगति का मापदंड रहा है। "अर्थ" आज ताकत ही है। भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार कृषि होने के कारण कृषिप्रधान अर्थव्यवस्था बनी है। आर्थिक स्थिति का आधार परंपरागत कुटीर उद्योग, बरसात पर निर्भर खेती ही हैं। अर्थ व्यवस्था में अमीर और गरीब यही दो वर्ग रहे हैं। दलित के गरीबी. भूख, अर्थाभाव साथी है। उनके पास न खेती है न शिक्षा है। आवास, निवास, रोजी.रोटी, कपड़ा.मकान की समस्या, गंदी बस्ती, अनेक बीमारि यों के शिकार नंगे दलित रहे हैं। लगता है कीड़े–मकोड़ों की जिंदगी दलितों के नसीब ही है। इससे मक्ति तब संभव है जब वे साक्षर होंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आलोच्य हिंदी उपन्यासों में दलितों की आर्थिक स्थिति, सरकार विकास नीति, दलितों की परिवर्तित मानसिकता पर प्रकाश डाला है।

आज वह पढ़.लिख कर आगे बढ़ रहा है। अपने व्यवसाय में भी नया तंत्रज्ञान का उपयोग करके अधिक उत्पादन निकालने की उनकी मानसिकता बनी है। परंपरागत धंधा छोड़कर सरकारी कर्ज की सहायता से नया धंधा करने वाला चरणदास, सचिव युगेश्वर, पुलिस अधिकारी अशोक, ग्राम सेवक उरावजी, इंजीनियर आदप्तदास, मंत्री बावनदास, प्रोफेसर अरविंद, बिंदू, लाइब्रेरियन भागवत बाबू की पत्नी आदि पात्र आर्थिक चेतना के प्रमाण हैं आर्थिक चेतना के उदाहरण कम हो मगर दलितों की आर्थिक संपन्नता के प्रतीक है।

शैक्षिक चेतना

स्वतंत्रता के बाद की अवधि में भारत सरकार ने भारतीय लोगों को शिक्षित किया है। शिक्षित, सुसंस्कारित करके सदृढ़, प्रजातांत्रिक, प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण हेतु अनेक कानून पारित करके विकास योजनाएँ बनायी। शिक्षा को मुफ्त और अनिवार्य मानकर प्राथमिक शिक्षा से लेकर महाविद्यालय तक छात्रवृत्ति की सविधा उपलब्ध करा दी। पाठशाला में जातिपात छूआछूत को मानना अपराध माना गया। सभी के लिए पाठशाला में प्रवेश प्राप्त हुआ। दलितों को अध्यापक बनाया गया। झुग्गी झोपड़ी बस्ती में पाठशाला खोली गई, आश्रमशाला, प्रौढशिक्षा, रात की पाठशाला की व्यवस्था हो गई परिणामतः दलित शिक्षित हो गया। सरकारी विकास योजनाएँ शुरू की गई परंतु अच्छे परिणाम नहीं निकले। यहाँ इस पर प्रकाश डाला है।

प्रारंभ में शिक्षा से वंचित दलित समाज में शिक्षा का कार्य मिशनरी, आर्य समाजी लोगों ने किया। जैसे–जैसे दलित शिक्षित बने वैसे–वैसे शिक्षित दलित युवक अपने समाज विकास की ओर ध्यान देने लगे। आजादी के पश्चात सरकारी विकास नीति, शिक्षा नीति के कारण दलित आरक्षण से समन्वित होकर शिक्षित, उच्चशिक्षित बना। 1660 के पश्चात लिखे उपन्यासों में डॉक्टर, इजीनियर, सविच बने दलित पात्र दिखाई देते हैं। उसके पहले अध्यापक जैसे सामान्य पात्र रहे है। यह परिवर्तन शैक्षिक चेतना के कारण हो रहा है। जाति पंचायत जो शिक्षा का विरोध करती अब शिक्षा संस्था खोल रही है तो दलित नेता महाविद्यालय चला रहे हैं जिससे दलित। को नौकरी समाजसेवा का अवसर मिल रहा है।

निष्कर्ष

दलित का जीवन संघर्ष की कहानी रहा है। हर स्तर पर दलित चेतित बनकर अस्तित्व की रक्षा करने लगा है। दलित साहित्य, दलित संगठन, नवजागरण काल के कारण दलित अपनी खोई अस्मिता पुनः प्राप्त करने लगा। ईश्वर का स्थान मानव ने लिया, मानवतावाद, समता, समानता का विचार प्रवाहित हुआ। दलित समाज में चेतना जागृति हुई। नवसमाज निर्मिती में दलित चेतना महत्वपूर्ण रही है। दलित विकास, राष्ट्र निर्माण सामाजिक समता के लिए जागृत। दलित का होना महत्वपूर्ण है। सशक्त राष्ट्र

निर्माण के लिए दलित चेतना का होना आवश्यक है। जब तक दलित विकसित नहीं होता तब तक देश के विकास का महत्व नहीं।

राजनीतिक चेतना के कारण दलित संघटित होकर राजनीति अधिकार वोट, आरक्षण, का लाभ उठा रहा है। दलित समाज से नेतृत्व निर्माण हो रहा हैए सरकार चलाने में दलित समाज का सहयोग मिल रहा है। दलितों का धर्मातरण एक समस्या है, परंतु दलित ईसाई क्यों बन रहे इस पर भी सोचना चाहिए। दलितों को सहानुभूतिए दया नहीं बल्कि उनके हक चाहिए। समानता चाहिए। अपमान, असहाय जिंदगी के कारण दलित ईसाई बन रहे हैं। इसे समय पर थोपना चाहिए .ऐसा लगता है। "अर्थ" अपमान का कारण है। दलितों का जन्म ही अर्थाभाव में होता हैए जन्म से यही उनका साथी है। आज सरकार की उदारनीति के कारण दल आर्थिक स्थिति में प्रगत हो रहा है। भौतिक सुख.सुविधा प्राप्त कर रहा है। नगर, महानगर, संस्कृति के संपर्क में आने के कारण दलित शिक्षित बन रहा है। शिक्षा का महत्व समझ रहा है। आज उच्च पदों पर कार्य करने वाले दलित इसके प्रमाण है। अतः स्पष्ट है दलित जीवन परिवर्तित हो रहा है। इसका कारण उनमें उत्पन्न चेतना ही है। अतः चेतित, जागृत दलित सामाजिक परिवर्तन एवं विकास की नींव होगा, ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा।

संदर्भ सूची

1. नेने.जोशी बद्ध मराठी.हिंदी शब्दकोश, पृ. 314
2. अरविंद कुमार समान्तर कोश, पृ. 666
3. मगेन्द्रनाथ बाबू, हिंदी शब्दकोश, पृ. 488
4. हंस जनवरी, 150
5. 5, आनंद यादवए,सामाजिक स्थिति और साहित्य की नई धाराएँ,
6. 6, डॉ, रघुवीर सिंह डॉ, आंबेडकर और दलित चेतना, पृ, 75
7. 7, डॉ, सुमित्रा त्यागी, हिंदी उपन्यास आधुनिक विचारधाराएँ, पृ, 166
8. 8, मन्नू भंडारीए महाभोजए पृ0,177